shardhanjali1:arunjaity.qxd 9/26/2010 8:16 PM Page 80

नाना, तुझे प्रणाम

डॉ मोहन धारिया,
अध्यक्ष
भा. राष्ट्रपति भारत सरकार द्वारा
पद्मविभूषण पुरस्कार से सम्मानित

वनराई 8, मार्च 2010

वनराई

सादर प्रणाम,

दीनदयाल शोध संस्थान की ओर से दिवंगत राष्ट्रऋषि श्री नानाजी देशमुख की पावन स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा का खत आज ही प्राप्त हुआ। आदरणीय नानाजी मेरे मित्र थे और उनके लिए मेरे दिल में अनन्य असाधारण स्थान था। उनका समर्पित जीवन तथा कार्य कभी भी भूल नहीं सकेंगे। इस अवसर पर आदरणीय दिवंगत नानाजी देशमुख की स्मृति को मेरी भावपूर्ण श्रद्धांजलि। आयोजित श्रद्धांजलि सभा के साथ मेरी सद्भावनाएँ है।

धन्यवाद सहित,

विनीत,

(मोहन धारिया)

श्री अभय महाजन,
संगठन सचिव, दीनदयाल शोध संस्थान,
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर,
झंडेवाला एक्स्टेंशन,
नई दिल्ली-110055

मध्यप्रदेश विधान सभा

सोमवार, दिनांक 8 मार्च, 2010 (फाल्गुन 17, 1931)

की कार्यवाही से उद्धरण

निधन का उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है। कि सुप्रसिद्ध समाज सेवक, श्री नानाजी देशमुख का दिनांक 27 फरवरी, 2010 को निधन हो गया है।

श्री नानाजी देशमुख का जन्म 11 अक्टूबर, 1916 को कडोली, जिला परभणी (महाराष्ट्र) में हुआ था।

श्री देशमुख 1928 से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सम्बद्ध रहे. आप भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे. 1948-51 में आपने राष्ट्रधर्म प्रकाशन के प्रबंध निदेशक के रूप में कार्य किया. श्री देशमुख ने सन् 1974 में श्री जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन में मुख्य संयोजक के रूप में कार्य किया और जनता पार्टी के महासचिव रहे. आप साढ़े तीन वर्ष तक चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के प्रथम कुलाधिपति भी रहे. श्री देशमुख 1977-79 में छठी लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और नवम्बर, 1999 में राज्यसभा के लिए नाम निर्दिष्ट हुए, आपको पदम विभूषण और पुणे तथा अजमेर विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ लेटर्स से विभूषित किया गया था।

श्री देशमुख एक निष्काम कर्मयोगी और समाजसेवी थे. ग्राम और ग्रामीणों की दशा और दिशा बदलने में आपने अपना पूरा जीवन समर्पित किया. आपके अवसान से देश एवं प्रदेश के सार्वजनिक जीवन की अपूरणीय क्षति हुई है.

श्रीमती जमुना देवी नेता प्रतिपक्ष : मा. अध्यक्ष महोदय, आपने भाषण में नानाजी देशमुख के बारे में जो विचार व्यक्त किये हैं, उन विचारों से सहमत होते हुए मैं कहना चाहूंगी कि श्री नानाजी देशमुख 1928 से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबद्ध होकर अपने क्षेत्र में काम करते रहे. इसके अलावा नानाजी ने अपने जीवन को समाजसेवा में समर्पित करके जो समाज की सेवा की है, वह तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी अनुसरण करना चाहिए. चित्रकूट में उन्होंने ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना में भी वे कुलाधिपति रहे और मैं सोचती हूँ कि चित्रकूट का बहुत कुछ उनके कार्यो से एक नक्शा बदला है वहां पर लोगों में जागृति और समाज सेवा के काम भी उन्होंने किये हैं, राज्यसभा, लोकसभा और विधान सभा में भी अपनी सेवाएं दी हैं. नानाजी को खोकर देश और प्रदेश के सार्वजनिक जीवन की अपूरणीय क्षति हुई है. उनके कामों को आज भी हम याद करते हैं, वे बहुत अच्छे समाजसेवक थे. मैं अपने दल की ओर से उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ और शोकसंतप्त परिवार को ईश्वर यह कष्ट सहन करने की ताकत दे.